2. 'भारत दुर्दशा' नाटक के आधार पर भारतेन्दुयुगीन परिस्थितियों पर प्रकाश डालिए? (15)

अथवा

रंगमंच की दृष्टि से 'भारत दुर्दशा' नाटक की समीक्षा कीजिए?

3. "'ध्रुवस्वामिनी' एक स्त्री विमर्श का नाटक है" -- इस कथन की पुष्टि कीजिए? (15)

अथवा

'ध्रुवस्वामिनी' नाटक के आधार पर चन्द्रगुप्त की चारित्रिक विशेषताओं का विवेचन कीजिए?

4. 'कथा एक कंस की' नाटक के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए? (15)

अथवा

"'कथा एक कंस की' मंचन की दृष्टि से सफल नाट्य कृति है"- इस कथन की समीक्षा कीजिए?

5. 'उत्सर्ग' एकांकी के शीर्षक की सार्थकता पर प्रकाश डालिए? (15)

अथवा

'तौलिये' एकांकी की तात्विक समीक्षा कीजिए?

[This question paper contains 4 printed pages.]

Maitreyi College ★ LIBRARY Chanakyapuri, New Delhi-110021

28.12.2023(M)

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 571 **G**

Unique Paper Code : 2052102302

Name of the Paper : Hindi Natak Evam Ekanki
हिन्दी नाटक एवं एकांकी

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi**

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए- (10×3=30)

(क) कोऊ नहीं पकरत मेरो हाथ।
बीस कोटि सुत होत फिरत मैं हा हा होय अनाथ ।।
जाकी सरन गहत सोइ भारत सुनत न कोउ दुखगाथ ।।
दीन बन्यौ इत सों उत डोलत टकरावत निज माथ।
दिन-दिन बिपति बढ़त सुख छीजत देत कोऊ नहिं साथ।
सब बिधि दुख सागर में डूबत धाइ उबारौ नाथ ।।

अथवा

फूट बैर और कलह बुलाऊं, ल्याऊँ सुस्ती जोर।
घर-घर में आलस फैलाऊँ, छाऊँ दुख घनघोर।। मुझे...
काफिर काला नीच पुकारूँ, तोड़ूँ पैर और हाथ।
दूँ इनको संतोष खुशामद, कायरता भी साथ।। मुझे...
मरी बुलाऊँ देस उजाड़ूँ, महँगा करके अन्न।
सबके ऊपर टिकस लगाउँ, धन है मुझको धन्न।।
मुझे तुम सहज न जानो जी, मुझे इक राक्षस मानो जी।।

(ख) मेरी रक्षा करो। मेरे और अपने गौरव की रक्षा करो। राजा, आज मैं शरण की प्रार्थिनी हूँ। मैं स्वीकार करती हूँ, कि आज तक मैं तुम्हारे विलास की सहचरी नहीं हुई, किन्तु वह मेरा अहंकार चूर्ण हो गया है। मैं तुम्हारी होकर रहूँगी। राज्य और सम्पत्ति रहने पर राजा को, पुरुष को बहुत-सी रानियाँ और स्त्रियाँ मिलती हैं, किन्तु व्यक्ति का मान नष्ट होने पर फिर नहीं मिलता।

अथवा

विवाह की विधि ने देवी ध्रुवस्वामिनी और रामगुप्त को एक भ्रान्तिपूर्ण बन्धन में बाँध दिया है। धर्म का उद्देश्य इस तरह पद दलित नहीं किया जा सकता। माता और पिता के प्रमाण के कारण से धर्म-विवाह केवल परस्पर द्वेष से टूट नहीं सकते; परन्तु यह सम्बन्ध उस प्रमाणों से भी विहीन है। और भी (रामगुप्त को देखकर) यह रामगुप्त मृत और प्रव्रजित तो नहीं, पर गौरव से नष्ट, आचरण से पतित और कर्मों से राजकिल्विषी क्लीव है। ऐसी अवस्था में रामगुप्त का ध्रुवस्वामिनी पर कोई अधिकार नहीं।

(ग) सोते में विकराल हाथों की लौह-जकड़ और जागते में यमवाहन की चीत्कार-सा वंशीरव। यह कैसी यातना है- न सोते चौन, न जागते शान्ति। जीते हुए मृत्यु और मृत्युमय जीवन। सोने और जागने का अन्तर मिट गया। जीवन और मृत्यु की अन्तर्रेखा धुँधली पड़ती जा रही है। और धुँधल के में रूप ले रहे हैं- कुछ प्रश्न। मूर्तिमान प्रश्न-क्या हर अत्याचार आत्मयंत्रण है? क्यों हर हत्या आत्महत्या है?

अथवा

यदि मैं बचपन ही से ऐसे वातावरण में पली हूँ जहाँ सफाई और सलीके का बेहद ख्याल रखा जाता है तो इसमें मेरा क्या दोष? वे सफल और व्यवस्था की मेरी इच्छा को घृणा बताते हैं। मैं बहुतेरा यत्न करती हूँ कि इस सब सफाई-वफाई को छोड़ दूँ, इन तकल्लुफात को तिलांजलि दे दूँ, पर अपने इस प्रयास में कभी-कभी मुझे अपने आपसे घृणा होने लगती है। बचपन से जो संस्कार मैंने पाये हैं उनसे मुक्ति पाना मेरे लिए उतना आसान नहीं। पर नहीं। मैं इन सब बहमों को छोड़ दूँगी। पुरानी आदतों से छुटकारा पा लूँगी। वे समझते हैं, मैं उनसे नफरत करती हूँ।